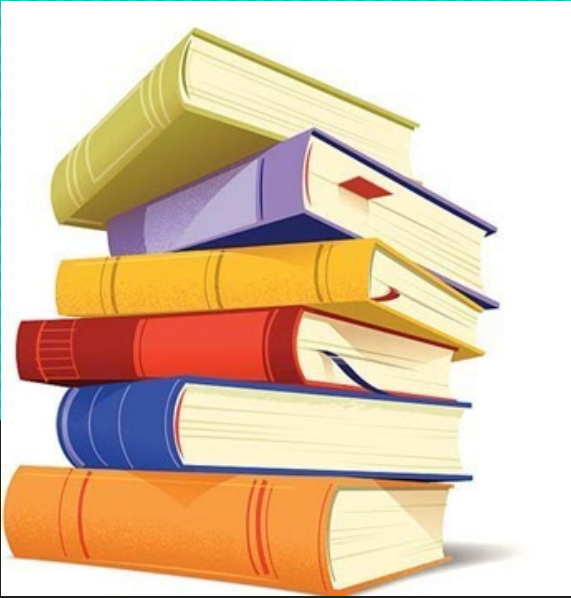


संसार पुस्तक है

जवाहरलाल नेहरू



मुख्य बिंदु

यह पाठ एक पत्र है
जिसे जवाहरलाल नेहरू
ने अपनी पुत्री इंदिरा
गांधी को लिखा।

प्रकृति अपनी कहानी
स्वयं बताती है, हमें उसे
समझने का प्रयास करना
चाहिए।

जब किसी विद्वान ने
पहली बार किताब लिखी
तो उसे जानकारी कहाँ
से मिली, हमें यह
समझना होगा।

लेखक हमें विश्व का
ज्ञान अर्जित करने के
लिए प्रेरित करते हैं।

लेखक ने गोल, चमकीले
रोड़े के बनने का
उदाहरण दिया है।

पाठ का सार

‘संसार पुस्तक है’ पाठ एक पत्र है जो पिता ने अपनी पुत्री को लिखा। ये पत्रों को ‘पिता के पत्र पुत्री के नाम’ से संकलित कर प्रकाशित किया गया है। जवाहर लाल नेहरू द्वारा अंग्रेजी भाषा में लिखे पत्र का हिंदी अनुवाद प्रेमचंद जी ने किया है।

लेखक ने इस पत्र को पुत्री के दूर रहने के कारण सारी जानकारी देने के लिए लिखा है। वो हर छोटी से छोटी बात को भी अपनी पुत्री को बताना चाहते थे। लेखक चाहते हैं कि उनकी पुत्री सिर्फ हिंदुस्तान के बारे में जानकर ‘टापू’ न बने बल्कि वह सारे विश्व के बारे में जाने। सभी से प्रेमपूर्वक व्यवहार करे, भाषा सीखे।

लेखक अपनी पुत्री को धरती के विषय में बताते हुए कहते हैं कि यह धरती बहुत पुरानी है। कैसे परिवर्तन से धरती पर जीवन आया। लेकिन धरती के इस विकास को हम कैसे समझे। आज हमारे पास किताबें हैं पर वो पहला विद्वान कैसे समझा होगा? लेखक कहते हैं कि संसार स्वयं एक किताब है यदि हम ध्यान से इसमें होने वाले परिवर्तन को देखेंगे तो समझा सकते हैं। इसके लिए लेखक ले खुरदरे पत्थर से गोल –चिकने पत्थर के बनने का उदाहरण दिया है।